रविवार, दिनाँक **09-06-2024** को सत्संग में हुए वचनों का संक्षिप्त विवरण

महाबीर जी दे चरणां तों वारी प्यारिया, वारी प्यारिया बलिहारी प्यारिया,

महाबीर जी दे चरणां तों वारी प्यारिया।

जन्म जन्मांतराँ दी गहरी निद्रा विचों, हुण आन जगाया बलधारी प्यारिया
महाबीर जी दे चरणां तों वारी प्यारिया।

राह अवलड़ा ते औखा हाई पैंडा, हुण सौखा दिखाया बलधारी प्यारिया।

संसार समुंद्र विच किश्ती डोले, हुण किनारे लगाई गदाधारी प्यारिया।

दासियां गिरदियां नूं तुसां गिरन न देवना, हुण ताकत बख्शनी बलधारी प्यारिया।

महाबीर जी दी सूरत लखी न जाये, कई चन्द्रमा दे चन्द्र उत्तों वारी प्यारिया।

कई सूरजां दे सूरज उत्तों वारी प्यारिया, महाबीर जी दे चरणां तों वारी प्यारिया।

मोर मुकट मत्थे तिलक विराजे, ओ सिंघासन ते साजन धनुषधारी प्यारिया।

पीले वस्त्र गल वैजन्ती माला, सेवक लक्ष्मण ब्रह्मचारी प्यारिया।

ऋषि मुनि अन्त पा न सकन, ताकत है रघुनाथ जी दी सारी प्यारिया।

हुण भैणों तुसी होश सम्भालो, दासी हथ जोड़ अर्ज गुज़ारी प्यारिया।

सजनों हम सब कितने भाग्यशाली हैं जो हमें कई योनियों के पश्चात आत्मोद्धार हेतु यह मानव चोला प्राप्त हुआ है। इस संदर्भ में सजनों सच्चेपातशाह जी इस मानव चोले का लाभ उठाते हुए, भवसागर से पार होने हेतु हर कलुकालवासी का विनम्र मार्गदर्शन करते हुए कहते हैं कि हे मेरे सजनों ! अपनी किस्मत को जगाने हेतु, सजन श्री शहनशाह हनुमान जी के शास्त्र विहित वचनों को ध्यानपूर्वक सुनो, समझो और मनन करो। कहने का तात्पर्य यह है कि स्वार्थ से परमार्थ बनने में विलम्ब मत करो अन्यथा यह विलम्ब आपकी हार का प्रमुख कारण बन सकता है। अतः जागृति में आओ और सजन श्री शहनशाह हनुमान जी के

वचनों पर अपना सर्वस्व न्यौछावर कर विजयी हो जाओ। इस परिप्रेक्ष्य में पूर्ण सफलता प्राप्त करने हेतु, अब तक जो अन्य कहीं से, जीवनयापन करने की युक्ति प्राप्त हुई है, उसको तत्क्षण त्यागने का निश्चय ले लो और जो सहज व सरलता प्रसन्नतापूर्वक जीवन जीने की युक्ति सजन श्री शहनशाह महाबीर जी के द्वारे से प्राप्त हो रही है उसको अपनाकर एकता, एक-अवस्था में आ जाओ। ए विध् समभाव-समदृष्टि अनुसार परस्पर सजन भाव का वर्त-वर्ताव करो ताकि मन से सारे दुर्भाव समाप्त हो जायें। याद रखो जो भी ऐसा पुरुषार्थ दिखाएगा उसका मलिन मन निश्चित रूप से कंचन हो जायेगा और वह समझदार यानि अक्लमन्द इन्सान अपना ख़्याल आत्म-स्वरूप में स्थित रखने में सफल हो जायेगा। परिणामतः निज यथार्थ हृदयगत प्रगट हो जायेगा और ब्रह्ममय होकर जगत में विचरना आसान हो जायेगा। जानो यहाँ पहुँचकर हर प्रकार का भक्ति-भाव समाप्त हो जायेगा क्योंकि सुरत अज्ञानमय अवस्था से उबरकर ज्ञानमय अवस्था में आ जायेगी। अतः सजनों समझो कि जैसे ही आत्मज्ञान प्राप्त हो जाता है वैसे ही सब कुछ प्राप्त हो जाता है। जब सब कुछ प्राप्त हो जाता है तो मन को आत्मतोष का अनुभव हो जाता है यानि सन्तोष मिल जाता है। अब जहाँ सन्तोष है वहाँ धैर्य है और जहाँ सन्तोष-धैर्य है वहाँ सच्चाई-धर्म का रास्ता अपनाना सुगम है। सजनों यह कामना मुक्त होकर निष्काम होने की बात है। याद रखो निष्कामी ही सत्यवादी व धर्मपरायण होता है। इस विषय में ज्ञात हो कि मानव धर्म भी यही कहता है। अतः यदि आप मानव धर्म को स्वीकारते हो तो जगत में जो कुछ भी करना, वह सर्वहित को दृष्टिगत रखते हुए निष्काम भाव से ही करना। ऐसा करने से ही एकात्मा का भाव पनपेगा और परमात्मा का साक्षात्कार होगा।

इस संदर्भ में सजनों समझ लो कि स्वाभाविक बदलाव यानि पलटा खाने के लिये शास्त्र-विहित वचनों की पालना करने का पुरुषार्थ दिखाना अत्यन्त आवश्यक है। अगर आप ऐसा करते हो तो निःसन्देह आप अपने जीवन का फ़र्स्ट का नतीजा दिखाओगे ही दिखाओगे। इसके विपरीत अगर आप शास्त्र-विहित वचनों की पालना करने में स्वयं को असमर्थ पाते हो तो समझ लेना आप फेल हो। यहाँ फेल का मतलब है कि बार-बार जन्म-मरण के चक्कर में फँसे रहना यानि अभी जिस क्लास में आप बैठे हो उसी क्लास में ही बैठे रहोगे। अब यह तो सब जानते ही हैं कि एक ही क्लास में बैठे रहना अज्ञानमय अवस्था में बने रहने की यानि अज्ञानी बने रहने की बात होती है। ऐसे अज्ञानी को फिर कभी भी आत्मबोध नहीं हो पाता। इस बात को सुन-समझ कर सजनों अपना व अपने परिवारों के जीवन को

सँवारने का निश्चय खुद लो। अन्यथा आप किसी अन्य को दोषी नहीं ठहरा सकते यानि अगर आप जीवन हारते हो तो यह वास्तव में आपका अपना ही दोष होगा और यदि जीतते हो तो यह भी आपका अपना ही पुरुषार्थ होगा। चलो अब कीर्तन सुनोः-

संम्भल संम्भल के चल वे, इस जग रहना नहियों।

बन्दे बात चलन वाली करवे, इस जग रहना नहियों।।

इत्थे रहना नहियों, इत्थे बहणा नहियों।

इत्थे रहना नहियों इक पल वे, इस जग रहना नहियों।।

तूं अपना आप संभल वे, इस जग रहना नहियों।

तूं नाम रटन दी कर वे, इस जग रहना नहियों।।

महाबीर जी दा द्वारा मल वे, इस जग रहना नहियों।

महाबीर जी दे वचनां ते चल वे, इस जग रहना नहियों।।

तूं नाम दा संदूकचा भर वे, इस जग रहना नहियों।

तूं किश्ती ते चढ़ने दी कर वे, इस जग रहना नहियों।।

सियाराम जी दे दर्शन कर वे, इस जग रहना नहियों।

सोहणियां चरणां ते सीस नूं धर वे, इस जग रहना नहियों।।

सांवले चरणां ते सीस नूं धर वे, इस जग रहना नहियों।

जादू पावन लीला दिखावन, महाबीर रघुनाथ प्यारे।।

हैरान हो गये हैरान हो गये गोजरे वासी सारे।

सजनों यह शारीरिक स्वभावों में उलझे हुए इन्सानों के लिये स्पष्ट सन्देश है। शारीरिक स्वभाव इन्सान की शारीरिक व मानसिक स्वस्थता को इस भान्ति भंग कर देते हैं कि परिवारों से एकता और शान्ति का वातावरण खण्ड-खण्ड हो जाता है। फिर जब अशान्तिपूर्ण वातावरण में जीवन चलता है तो इन्सान हर क्षण हैरान-परेशान रहता है और उसके लिए नाम-अक्षर चलाना नामुमकिन हो जाता है। आजकल यही चल रहा है, जो कि परमार्थिक उन्नति में बाधक है। इस सन्दर्भ में सजनों शास्त्र कह रहा है कि शारीरिक स्वभाव त्यागकर आत्मीयता के स्वभाव अपनाओ और आत्मीयता के स्वभाव अपनाकर काम-कामना से विमुक्त हो जाओ। सजनों इस बात पर विचार करो कि ऐसा करते समय कहाँ कठिनाई आती है। उस कठिनाई का युक्तिसंगत हल कर कामना मुक्त हो जाओ। जानो जब कामना से मुक्ति मिल जाती है तो क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार इनका कोई अस्तित्व नहीं रहता और बुद्धि हर फुरने से स्वतन्त्र हो जाती है। जब फुरनों से स्वतन्त्रता मिल गई तो फिर फुरनों में उलझकर उदासीन जीवन जीना अच्छा नहीं लगता। आप भी सजनों अफुर जीवन जीने हेतु आत्म नियन्त्रण रखते हुए निर्विकारिता के मार्ग पर अग्रसर हो जाओ। आप ऐसा करने में सक्षम हों उसके लिये चैत्र के यज्ञ पर आपको एक काम दिया गया था। उसमें विपरीतार्थक शब्द थे, जैसे काम-निष्काम आदि। आपने इन शब्दों को समझना था। इस विषय में यदि एक-एक शब्द को एक दिन में भी करो तो आप दो महीने में अपना काम पूरा कर स्वाभाविक बदलाव लाने में सक्षम हो सकते हो। अब सवाल यह उठता है कि क्या आपने वह क्रिया नियमित ढँग से करनी आरम्भ कर दी है या नहीं? अगर कर दी है तो आप अपने, अपने परिवारजनों के और समाज के सजन हो। इसके विपरीत यदि नहीं करी तो आप अपने समेत सबके दुश्मन हो जो कि नालायकी कर्म है। सजनों इस नालायकी कर्म से उबरो और सम्भल जाओ क्योंकि इसके लिये अभी आपके पास पर्याप्त समय है। आशय यह है कि चैत्र के यज्ञ पर बताई क्रिया को धार्मिक चर्चा का स्वरूप देते हुए, परिवारजनों में, संगी साथियों के साथ बैठकर समझने का प्रयास करो। एक दिन में एक शब्द और उसके विपरीत अर्थ पर चर्चा करो। जानो नियमित ऐसा पुरुषार्थ दिखाने पर आपके अन्दर परिवर्तन के प्रति सार्थक उत्साह बढ़ेगा। जिनको इन शब्दों के अर्थ समझ आ गये तो उन्हें पता लग जायेगा कि कौन सा भाव नकारात्मक है जो कि मेरे मन-मस्तिष्क को नकारा बनाता है और कौन सा भाव सकारात्मक है। यदि एक बार सकारात्मक भाव अपनाने में आप सफल हो गये तो आपको अच्छा लगेगा और आपकी हिम्मत भी बढ़ेगी। इसके साथ-साथ आप यह भी समझोगे कि मैं तो अब तक व्यर्थ में सोया ही रहा जबकि मैं तो कर सकता हूँ। इस महत्ता के दृष्टिगत सजनों इस क्रिया को हर हाल में प्राथमिकता दो।

इस संदर्भ में सजनों अगर अब तक यह क्रिया न करने की भूल हो चुकी है तो अपनी भूल सुधार लेना। यकीन मानो कि ऐसा करने से आपके परिवारों का वातावरण बदल जायेगा और आपके बच्चे भी परमार्थ अपनाना पसन्द करने लगेंगे व आपकी ताकत बन जायेंगे। आगे तो आपकी किस्मत आपके अपने हाथ में है। कोई दूसरा आपके लिये कुछ नहीं कर सकता। इस विषय में सजनों अगर तो नश्वरता के भाव से जीते हो तो आपकी मृत्यु निश्चित है और यदि अमरता के भाव से जीते हो तो सर्व एकात्मा का दर्शन हो सकता है। एकात्मा का दर्शन होने पर जीव-ब्रह्म की रमज समझ आ जाती है और संसार का खेल समाप्त हो जाता है। फिर इंसान परमधाम पहुँच विश्राम को पा जाता है। इस संदर्भ में सजनों अब जो बुलेगा उससे आपको पता चल जायेगा कि मानव क्या होता है? मानवता का धर्म क्या होता है और मानवता के अन्तर्गत नीतिबद्ध कैसे बने रह सकते हैं? अब अपना मानव होने का भाव मजबूत करने के लिये और मानवता धर्म अपनाने के प्रति दिल-ओ-दिमाग से तैयार हो जाओ। एक-एक शब्द को ध्यान से सुनना और हँसकर बोलना ताकि आपके अन्दर उतरेः-

हम जानते हैं हम मानव हैं

हम जानते हैं हम मानव हैं

और मानवता है धर्म हमारा

इसीलिए तो कहते हैं

सब मिल कर बोलो हाँ मिल कर बोलो

मानव धर्म ज़िन्दाबाद, मानव धर्म ज़िन्दाबाद, मानव धर्म ज़िन्दाबाद

हम श्रेष्ठ कृति हैं ईश्वर की

श्रेष्ठता ही हमारा गहणा है

हर हाल में हम सबको तो

श्रेष्ठता में ही रहना है

मानव धर्म ज़िन्दाबाद, मानव धर्म ज़िन्दाबाद, मानव धर्म ज़िन्दाबाद

इस सत्य से हम परिचित हैं

हम आत्मा हैं, शरीर नहीं

आत्मिक गुण अपनाकर ही

हम श्रेष्ठ मानव बन सकते हैं

मानव धर्म ज़िन्दाबाद, मानव धर्म ज़िन्दाबाद, मानव धर्म ज़िन्दाबाद

इस हेतु हम सब मानते हैं

हमें आत्मिक ज्ञान पढ़ना होगा

ए विध् आत्मिक ज्ञानी बन

जगत कल्याण करना होगा

श्रेयस्कर बनने पर मानव

मानव धर्म अपना सकता है

और मानवता का प्रतीक बन

श्रेष्ठ मानव कहला सकता है

इस संदर्भ में सभी से प्रार्थना है कि मन-चित्त लगाकर आत्मिक ज्ञान पढ़-समझ कर मनन द्वारा यथा व्यवहार में लाना सुनिश्चित करो और यथार्थ रूप से मानव होने की अवस्था में

आ जाओ। ए विध् एक श्रेष्ठ मानव के आदर्शों तथा स्वाभाविक गुणों, भावनाओं इत्यादि से परिचित हो लोक-कल्याण के लिए कार्य करने में निष्काम भाव से रत हो जाओ ताकि सभी मानवों का जीवन अधिक सुखमय हो जाए तथा कष्ट और पीड़ा में कमी आए। जानो ऐसा सुनिश्चित करने में समर्थ होने के लिए दानवीय वृत्ति छोड़ सहृदयता, दयालुता आदि मानवीय गुणों से युक्त होना होगा और इस तरह श्रेष्ठ मानव की तरह अपने जीवन काल में कर्मठता से श्रेयस्कर मोक्ष प्रदायक कर्म करते हुए अपनी सर्वोत्कृष्टता को सिद्ध कर अपना जीवन सफल बनाना होगा।

सजनों अब आपने क्या निश्चय लिया है?

'मानव धर्म अपनाने का'।

अगर मानव धर्म अपनाने का निश्चय लिया है तो मजबूती दिखानी होगी। इसके विपरीत अगर यह सब कुछ सुनने-समझने के पश्चात भी अमानवीय चलन में बने रहना उचित समझते हो तो यह नादानी होगी। जानो जहाँ नादानी होती है वहाँ परेशानी अवश्य ही होती है। जहाँ परेशानी होती है वहाँ मुख मण्डल मुरझाया हुआ नजर आता है क्योंकि ख़्याल सोचों में गोते खा रहा होता है जो कि ख़्याल का मनुराज में गिरने की बात होती है। अब कहाँ तो ख़्याल को आत्मोत्कर्ष के शिखर पर ले जाना था और कहाँ ख़्याल धरातल में चला जाता है। इसी कारणवश आत्मतत्त्व से दूरी बन जाती है और इन्सान अक्लहीन हो जाता है। अब अक्लहीन अवस्था में दुःखद बने रहना अच्छा है या मानवता के गुण अपनाकर अक्लमन्द नाम कहाना अच्छा है, दोनों में से कौन सा उत्तम है? इस पर विचार कर लेना।

सजनों अब अपने जीवन का शुभ अथवा अशुभ परिणाम प्राप्त करना आपके अपने पुरुषार्थ पर निर्भर करता है। कहने का तात्पर्य यह है कि अपने जीवन की बर्बादी के जिम्मेदार आप खुद ही होंगे और अगर अक्लमन्द इन्सान बनते हो तो जीवन आबाद हो जाएगा। आपको जो पसन्द हो वह चुन लो। इस संदर्भ में हम तो यही कहेंगे कि अगर अब आप दुःखों से छुटकारा पाना चाहते हो तो मानव-धर्म को जानो व समझो और उस पर स्थिर रहो क्योंकि अब सतयुग आने वाला है। अब जितने भी मन-गढ़ंत धर्म हैं वह सब समाप्त होने वाले हैं।

सजनों जानो कि जिस धर्म की स्थापना कुदरत के वाली ने की है, केवल वही धर्म हमारा वास्तविक धर्म है। सो अपने धर्म को जानो-पहचानो और धर्मज्ञ बन जाओ। धर्मज्ञ बनने के लिये आत्मज्ञान प्राप्त करने का पुरुषार्थ करना ही होगा क्योंकि इसके बगैर यह कार्य सहज सिद्ध नहीं हो सकता। अतः इस सहज परिवर्तन को स्वीकार कर सुखद व आनन्द से भरे निष्कंटक रास्ते पर प्रशस्त हो जाओ और परोपकार कमाओ।

आप ऐसा करने में सफल हों, इन्हीं शुभ कामनाओं सहित।